Printing Area ISSN No. 2394-5303 Issue -45
Volume -02April 2018
Editor Dr Bapu Ji G.Gholap
Article: Iksivi sadi ki Punjab ki Hindi Kavtrio mein Dr Neelam Sethi krit Ka vita sangrah “mausmo ke sath sath”: Ek Parichay
Hashwardhan Publication

Principal
Shanti Devi Arya Mahila College
Dinanagar (GSP.)

ISSN 2394-5303

प्रिंटिंग एरिया

Issue-45, Vol-02 April- 2018

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with ACE Scanner

27) भारतीय निवडणूक यंत्रणेतील दोष विशेष संदर्भ : एक देश एक निवडणूक
प्रा.डॉ. आर.बी. लक्षटे देगलूर || 123

28) आरक्षण आणि भारतीय संविधान
प्रा. डॉ. दत्ताजी हुलप्पा मेहत्रे, जि. नांदेड || 129

29) लोकसंख्या अभ्यास
प्रा. विलास सोमाजी पवार, हिंगोली || 133

30) बालवाङ्मयातील अनुवादित मराठी बालकथा लेखन
सविता अशोकराव गोविंदवार, गडचिरोली || 135

31) तनावजन्य विघटन की स्थितियाँ : आधे अधूरे नाटक
डॉ. विजयकुमार एस. वैराटे, पैठण. || 139

32) बिहार के विकास में कुटीर एवं लघु उद्योगो का महत्व .....
डॉ० पूनम कुमारी, बिहार || 142

33) जैन तीर्थ एवं तीर्थस्थल
डॉ.संज्ञा,हजारीबाग || 147

34) अनुसूचित जातियों में सामाजिक गतिशीलता....
वैभव राघव, डॉ.चन्द्र कॅवर || 152

35) इक्कीसवीं सदी की पंजाब की हिन्दी कवयित्रियों में डॉ. नीलम सेठी...
डॉ.डिम्पल शर्मा, दीनानगर || 159

36) हिन्दी नाटकों में बदलते पारिवारिक मूल्य
डॉ. धीरेन्द्र शुक्ल || 162

37) भीलवाडा शहर की संरचना, विद्यमान भू–उपयोग एवं नियोजन:
डॉ. कुमार कार्तिकेय, भीलवाड़ा (राज.) || 164

38) श्रीमद् अमृतवाग्भवाचार्य का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
नरेन्द्र भारती || 172

39) इण्डो–रोमन व्यापारिक केन्द्र अरिकमेडु
डॉ. प्रीति पाण्डे, उज्जैन (म.प्र.) || 175

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal — http://www.vidyawarta.blogspot.com

Scanned with ACE Scanner

35

इक्कीसवीं सदी की पंजाब की हिन्दी कवयित्रियों में डॉ. नीलम सेठी कृत कविता संग्रह मौसमों के साथ–साथ : एक परिचय

डॉ . डिम्पल शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
शांति देवी आर्य महिला कॉलेज, दीनानगर

१८५७ ई के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् भारतीय साहित्यकारों ने भारतीय समाज में नई चेतना भरने के लिए ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध अपनी कलम चलाई। भारत के अलग–अलग राज्यों, कस्बों, जिलों, शहरों के रहने वाले साहित्यकारों ने भारतीय समाज के लोगों में नवीन चेतना को जागृत किया, यह नवीन चेतना पंजाब में रहने वाले लेखकों, कहानीकारों, कवियों आदि ने अपने साहित्य के माध्यम से लोगों के दिलों दिमाग तक पहुँचाई। आधुनिक काल का आरम्भ प्राय: सभी विद्वानों ने भारतेंदु के साहित्यिक उन्मेष से स्वीकार किया है। जिस प्रकार हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का आरम्भ भारतेन्दु से माना जाता है उसी प्रकार पंडित श्रद्धाराम फिल्लौरी पंजाब के आधुनिक हिन्दी कविता के भारतेन्दु माने जाते हैं। पंजाब के आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख रचनाकार मोहन सपरा, हरमहेन्द्र सिंह बेदी, उपेन्द्रनाथ अश्क, शशि भूषण शीतांशु, यशपाल, अजेय, मोहन राकेश, कृष्णा सोबती, सुरेश सेठ, विष्णु प्रभाकर, सुदर्शन, भीष्म साहनी, देवेन्द्र सत्यार्थी, मनमोहन सहगल आदि हुए हैं।

आधुनिक काव्यधारा में पंजाब प्रान्तीय महिला काव्य रचना का समावेश कुछ विलम्ब से हुआ। फिर भी पंजाब के आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी लेखन का पर्दापण जगतावली सूद १९२५ से माना जा सकता है। इसके साथ दूसरा नाम है–शंकुतला श्री वास्तव १९३० जिनके अनेक काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके है। पंजाब के आधुनिक हिन्दी कविता में पंजाब की हिन्दी कवयित्रियों के कशतित्व का महत्त्वपूर्ण योगदान है जिसके बिना पंजाब के आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास अभी तक अधूरा है। पंजाब से संबंधित २० कवयित्रियां और उनकी काव्य कृतियां जो इक्कीसवीं सदी की परिधी में आती है वह इस प्रकार है–

इन्दु वर्मा : 'अनहदनाद' २००१
उशा आर. शर्मा : 'दोस्ती हवाओं से' २००३, 'परिन्दे धूप के २००५, 'सूर्य मेरा तुम्हारा' २००९, 'बूंद बूंद एहसास' २०१२।
कीर्ति केसर : 'मुझे आवाज देना' २००२, 'अस्तित्व नये मोड़ पर' २०१२
गगन गिल : 'थपक थपक दिल थपक थपक' २००३
गीता डोगरा : 'दहलीज' २००६
चम्पा वैद : 'स्वप्न में घर' २००१
निर्मल कांता : 'काँच के टुकड़े' २०१०
निर्मल वालिया : 'पावस के गीत' २००६, 'बंदगी' २००७, 'रूहों के साये' २००८, 'आतिश' २००९, 'दीप–राग' २०१०, 'ठहरा हुआ आसमान' २०११
नीलम सेठी : 'मौसमों के साथ–साथ' २००१
पुष्पा राही : 'स्वत:' २००४, 'स्वयं' २००७, 'कुछ अलग' २००८, 'लीक से हटकर' २००८, 'बस यूँ ही' २०१०, 'लिखिते–लिखिते' २०११
मधु धवन : 'अमृतमयी' २००३, 'धरा पर खिला दिव्य फूल' २००४, 'कालचक्र' २००४
राज शर्मा : 'हार नहीं मानूंगी' २०१२
रूपिका भनोट : 'समय दहलीज पर' २०१०
विनोद कालरा : 'तुम यही कहीं हो' २००७, 'मैं खुशबू बनकर लौटूँगी' २०१०
विनोद सूद : 'पल्लिवित आस्था' २००१
शुकुतन्ला श्री वास्तव : 'पंख क्या अब आसमां क्या' २००२
शशि प्रभा : 'आइनों से झांकते अक्स' २००३, 'घने अंधेरे में भी' २००५, 'तेरा किस्सा मेरा किस्सा' २००७, 'बहुत कुछ अनुत्तरित' २०११
शशि सहगल : 'मौन से संवाद' २००१
शीला गुजराल : 'धरती का आतनाद' २००४
सुशमा लता अरेड़ा : 'नदी का गीत' २०११

इक्कीसवी सदी की बीस कवयित्रियों के काव्य संग्रह समकालीन स्थितियों को दर्शाने में सक्षम है । परन्तु प्रस्तुत पत्र में पंजाब के हिन्दी साहित्य की कवयित्री डॉ.

Scanned with ACE Scanner

Magazine Name:Vidya warta Issue-21 vol-02, jan to March 2018
ISSN-23199318
Editor : Dr. Bapu G. Gholap
Article : Ritikalin Vilas Kriti chitrkut Mahatmaye mein Ram Evam chitrkut ka mahatva[Importance of Chitrakoot and Rama in the Ritikāl Vilas work 'Chitrakoot Mahatmya (Vilas)']
Hashwardhan Publication

Principal
Shanti Devi Arya Mahila College
Dinanagar (GSP.)

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

ANNIVERSARY CELEBRATIONS
6th ANNIVERSARY
2018

विद्यावार्ता®

Issue-21, Vol-02, Jan. to March 2018
International Multilingual Research Journal

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with ACE Scanner

27) बाल कल्याण समिती : महाराष्ट्र राज्यातील समिती सुविधांचा अभ्यास
श्री अतुल आनंदराव देसाई || 112

28) "चले जाव" ची पंचाहत्तरी
डॉ. रघुथाथ धों. शेळ`, ढवळपुरी, || 115

29) आदिवासी क्षेत्रों में वृहद् विकास परियोजनाओं का क्रियान्वयन : स्थानीय समुदायों.....
नमिता अग्रवाल, अमित कुमार, श्रीगंगानगर. || 120

30) छत्तीसगढ़ के बिलासपुर नगर में प्रवासी सीमांत कामगारों का आर्थिक विश्लेषण:.....
डॉ. अब्दुल जावेद कुरैशी, बलौदा, आर. के खोटे प्राचार्य, टेमरी || 125

31) हिंद कहानी साहित्य में चित्रित 'थर्ड जेन्डर'
प्रा. रगडे पी. आर., वाघोली, || 128

32) डोगरी साहित्य जगत का ध्रुव तारा : यशपाल "निर्मल"
आशु शर्मा ,जम्मू. || 133

33) भारत में जनजातीय समुदाय की स्थिति
डॉ. ललित कुमार, रामपुर (उ.प्र.) || 135

34) आतंकवाद, पर्यटन और विकास (एक तुलनात्मक अध्ययन)
डॉ. सुधाँशु मिश्र, अजीतमल, डॉ. शुभा द्विवेदी, उन्नाव || 141

35) रीतिकालीन विलास कृति 'चित्रकूट माहात्म्य (विलास)' में चित्रकूट एवं राम.....
डॉ. डिम्पल, दीनानगर || 150

36) वैदिक साहित्य में स्त्री शिक्षा
डॉ. अलका तिवारी, इलाहाबाद || 155

37) कमीशन बड़ौदा एवं नवल किशोर प्रेस
डॉ. वन्दना सिंह, लखनऊ || 158

38) ज्ञान, ग्रंथ एवं ग्रंथागार: एक ऐतिहासिक विश्लेषण
अजय सिंह, वाराणसी || 160

39) भारत में चिकित्सा पर्यटन का विकास
डॉ. भुनेश्वर टेंभरे, मण्डला (म.प्र.) || 163

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with ACE Scanner

35

रीतिकालीन विलास कृति 'चित्रकूट माहात्म्य (विलास)' में चित्रकूट एवं राम का महत्त्व

डॉ. डिम्पल
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी–विभाग
शांति देवी आर्य महिला कॉलेज, दीनानगर

****

हिन्दी साहित्येतिहास के मध्यकालीन युग के उत्तरमध्यकाल अर्थात् रीतिकाल में श्रृंगार काव्य, नीति काव्य, वीर काव्य, सतसई काव्य, प्रकृति से संबंधित काव्य, काव्यशास्त्रीय काव्य, छंद से संबंधित काव्य मिलते है। इन सब काव्यों के अतिरिक्त श्रृंगार काव्य के साथ–साथ भक्ति संबंधित काव्य भी लिखे गए जबकि इस काल में श्रृंगार काव्य ज्यादा मात्रा में लिखा गया, परन्तु यह तथ्य सही प्रतीत नहीं होता क्योंकि इस काल में एक ओर काव्य लिखा जाता रहा जिसे विलास काव्य के नाम से जाना जाता है इन विलास काव्यों में श्रृंगारिकता के साथ–साथ भक्ति की भी प्रधानता मिलती है। प्रस्तुत शोध पत्र रीतिकालीन विलास कृति 'चित्रकूट माहात्मय' में चित्रकूट नामक स्थल और राम के महत्त्व से संबंधित है। 'चित्रकूट विलास' आदि से अंत तक भक्ति से ओतप्रोत है। चित्रकूट का महत्त्व समझने से पहले चित्रकूट और विलास का अर्थ जानना जरूरी है।

चित्रकूट शब्द दो शब्दों के योग से बना है। जिसमें चित्र का अर्थ है– 'रंग–बिरंगा, तस्वीर, आलेखन, किसी चीज की प्रतिमूर्ति।'१ परन्तु जहाँ पर चित्र का अर्थ रंग बिरंगा से संबंधित है और कूट का अर्थ है–'बांदा जिले का एक पर्वत।'२ इस आधार पर चित्रकूट का अर्थ हुआ– रंग–बिरंगा एक पर्वत। चित्रकूट से भाव– जो हिमालय की एक चोटी के नाम से संबंधित है। चित्रकूट का अध्यात्मिक रूप से बड़ा ही महत्त्व है। कहते हैं कि चित्रकूट में ही भगवान श्री राम ने तुलसीदास को दर्शन दिए थे, और जो हनुमान जी की कृपा से यह संभव हुआ था। अनुमान है कि चित्रकूट में आज भी हनुमान जी वास करते हैं जहां भक्तों को दैहिक और भौतिक ताप से मुक्ति मिलती है। कारण यह है कि यहीं पर भगवान राम की कृपा से हनुमान जी को उस ताप से मुक्ति मिली थी जो लंका दहन के बाद हनुमान जी को कष्ट दे रहा था। इस विषय में एक रोचक कथा है कि, हनुमान जी ने प्रभु राम से कहा, लंका जलाने के बाद शरीर में तीव्र अग्नि बहुत कष्ट दे रही है, तब श्री राम ने मुस्कराते हुए कहा कि–चिंता मत करों, चित्रकूट पर्वत पर जाओं। वहां अमृत तुल्य शीतल जलधारा बहती है, उसी से कष्ट दूर होगा। चित्रकूट का मतलब (रामायण) एक प्रसिद्ध रमणीक पर्वतीय स्थान जहां वनवास के समय राम, लक्ष्मण और सीता ने निवास किया था। चित्रकूट एक ऐसा स्थल है जो प्रकृति द्वारा स्वयं निर्मित है यहां पहुँच कर मानव का मन शांत और आत्मशुद्धि का अनुभव करता है। चित्रकूट नामक स्थल को यदि खोजा जाए तो भारत के दो उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश नामक राज्यों का नाम सामने आता है। जबकि इलाहाबाद से दक्षिण पश्चिम में १२५ किलो. मीटर की दूरी पर उत्तरप्रदेश के बाँदा और मध्यप्रदेश के सतना जनपदों में पावन मंदाकिनी अथवा ''पयस्विनी नदी' (पावन पयँ तिहुँ काल नहाहीं। जो बिलोकि अघ ओघ नसाहीं।)३ के सुरम्य तट पर अवस्थित चित्रकूट अपनी प्राकृतिक सुषमा के कारण सदैव से ऋषि–मुनियों के आकर्षण का केंद्र रहा है। अत्रि ऋषि ने यहां घोर तपस्या की थी। चित्रकूट १७वीं से १९वीं शताब्दी में रसिक भक्तों का केंद्र रहा है। यहां राम–सीता और लक्ष्मण ने स्वनिर्मित पर्णकुटी में कुछ मास निवास किया था। यही स्थल से श्री राम ने भरत को अयोध्या के राजसिंहासन का उत्तरदायित्व सहर्ष सौंपा था। यह स्थल भारत के विशिष्टतम तीर्थस्थलों में गिना जाता है। कहते हैं यह एक ऐसा स्थल है यहां पर श्री राम के पद अंकित है और सर्व इच्छाओं की पूर्ति करने वाला तीर्थ स्थान है।

Scanned with ACE Scanner

Magzine Name:Vidya warta Issue-33 vol-09, jan to March 2020
ISSN-23199318
Editor : Dr. Bapu G. Gholap
Article : Parmanand Dass ki Guru Bhagti[Pandulipi Shri Guru Bhagti Vilas k Vishesh Sandarbh mein] [Guru Bhakti of Paramananda Das (with special reference to the manuscript Sri Guru Bhakti Vilas)]
Hashwardhan Publication

Principal
Shanti Devi Arya Mahila College
Dinanagar (GSP.)

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

विद्यावार्ता®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Issue-33, Vol-09 January to March 2020

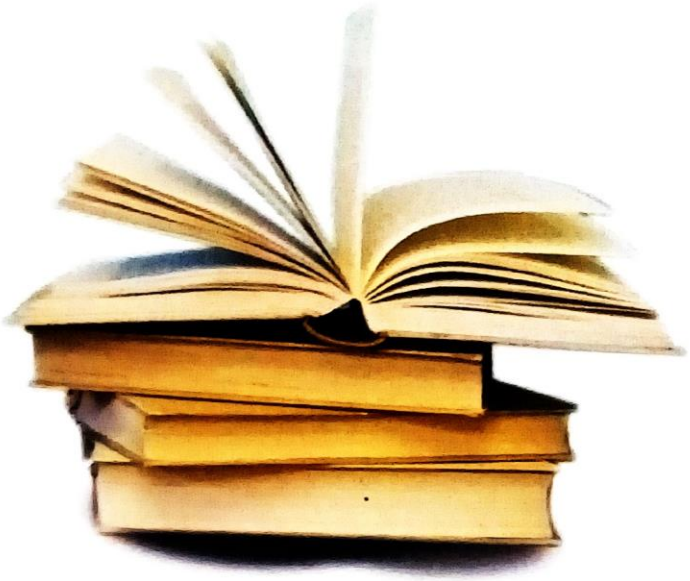

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with ACE Scanner

40) समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं मे हिंदी का योगदान ||172
डॉ. शेख मोहसीन शेख रशीद, जि. औरंगाबाद

41) कुपोषण का यर्थात्परक विश्लेषण (टीकमगढ़ जिला के विशेष संदर्भ में) ||175
डॉ. उषासिंह & एच. पी. सिंह, टीकमगढ़ (म.प्र.)

42) भक्ति आन्दोलन का उदय ||177
डॉ० राकेश उपाध्याय, आजमगढ़

43) महात्मा गॉधी: एक विचार, वर्तमान सन्दर्भ में प्रासांगिकता ||180
Rajkumar Yadav, Gwalior

44) भारत में मजदूर आन्दोलन : एक सिंहावलोकन ||184
डॉ० सबा मसूद, दरभंगा

45) परमानंद दास की गुरु भक्ति (पांडुलिपि श्री गुरु भक्ति विलास के विशेष संदर्भ में) ||190
डॉ. डिम्पल शर्मा, दीनानगर

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed-431 126
(Maharashtra) Mob.09850203295
E-mail: vidyawarta@gmail.com
www.vidyawarta.com

Scanned with ACE Scanner

45

परमानंद दास की गुरु भक्ति

(पांडुलिपि श्री गुरु भक्ति विलास के विशेष संदर्भ में)

डॉ. डिम्पल शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
शांति देवी आर्य महिला कॉलेज दीनानगर

गुरु की भक्ति को जो मन में धारण करता है उसकी भक्ति को मै मन में धारण करता हूँ। गुरु के दरवाजे पर जो भी जीव जन्तु जाता है वह उस पर भी दया भाव रखते हैं। गुरु के सामने जाते ही हर पैर तीर्थ बन जाता है। गुरु कृपा से ही सतसंग पैदा हुआ वो मानों संतों के दर्शन से पुण्य पैदा हो गया। गुरु कृपा से परमानंद की प्राप्ति होती है। (परमानंद दास)

निर्गुण संतों ने ब्रह्म को निर्गुण माना हैं। ईश्वर के रूप में विश्व की आत्मा कहलाता है। तद्नुसार आत्मा ने ही देह धारण कर जीव का अभिधान धारण किया। शंकराचार्य ने भी तरंग और तारंग रूप में जीव और ब्रह्म की चर्चा करते हुए जीव की लघुता को स्वीकार किया है। जीव अविद्या के कारण इस अभेद को भूलकर अपने आपको नाम और रूप के प्रपंच को सत्य मानकर जीव को आवागमन के चक्कर में भटकना पड़ता है। इस संसार के सभी असक्तिपूर्ण आकर्षण ही किसी समय उसे वैराग्य की ओर ले जाते हैं और वह भगवान् से एकमेक हो जाने के लिए प्रेरित हो उठता है। इस प्रकार के ज्ञान की प्राप्ति उसे गुरु के उपदेश द्वारा होती है। भक्त या साधक के हृदय में प्रेम की चिंगारी प्रज्जवलित करने वाला गुरु है। वैदिक युग में पुरोहित को ही गुरु कहा जाता था। जैसे–जैसे युग की परिस्थितियाँ बदलती रही, पुरोहित या गुरु का महत्व तदनुकूल ही परिवर्तित रूप धारण करता रहा है। उपनिषद काल, वैष्णव काल, नाथ सम्प्रदाय, मंत्र, तंत्र साधना, योग, ब्रह्मविद्या आदि में गुरु महिमा के दर्शन होते हैं। गुरु के इस इतिहास की परम्परा पौराणिक काल के बाद १३वीं शताब्दी तक एवं उसके बाद भी समान भाव से वैसी ही बनी रही। इसी तरह निर्गुण संतों द्वारा दिए गए गुरु महिमा तथा साधु के अंग में सद्गुरु की स्तुतियाँ एवं वंदनायें इस बात का प्रमाण हैं कि पण्ड़ितों और मुल्लाओं के पाखण्ड़ का खण्डन करते हुए भी उन्होंने गुरु के महत्व को स्वीकार किया है। १

गुरु शब्द के अर्थ की व्याख्या करते हुए गु का अर्थ अंधेरा और रु का अर्थ दूर करने वाला बताया गया है। इस प्रकार गुरु का भाव जो शिष्य के अज्ञान के अंधकार को दूर करता है, वह गुरु है। राधा वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित परमानंद दास द्वारा रचित श्री गुरु भक्ति विलास एक ऐसा काव्य है जिसमें गुरु की महिमा का विवरण मिलता है।

राधा वल्लभ सम्प्रदाय मध्ययुग के कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय में हित हरिवंश ही राधा वल्लभ के संस्थापक थे। हित उनका आराध्य तत्व है। राधा वल्लभ सम्प्रदाय के साहित्य में अध्यात्म पक्ष का विवेचन बहुत कम हुआ है। सम्प्रदाय की परिभाषिक शब्दावली में हित शब्द सबसे महत्वपूर्ण है इसका अर्थ है मांगलिक प्रेम जो परात्पर तत्व है, युगल रूप है, राधा–कृष्ण है। हित हरिवंश श्री कृष्ण की वंशी के अवतार कहे जाते हैं। एक बार जब वे अपने निवास स्थल देव बंद, सहारनपुर से वृंदावन जा रहे थे तो रास्ते में एक महान ब्राह्मण ने इन्हें अपनी दो कन्याएँ और एक श्री विग्रह कृष्ण की मूर्ति को भेंट किया। वृंदावन आकर इन्होंने राधा वल्लभ नाम से लता कुंजों में स्थापित किया, कहते हैं स्वयं श्री राधा जी ने इन्हें वृंदावन आकर स्वतंत्र सम्प्रदाय स्थापित करने का स्वप्न में आदेश दिया था। सन् १५३४ ई. में राधा वल्लभ लाल का पट–महोत्सव हुआ और इसके बाद इन्होंने अपनी राधा वल्लभीय पद्धति का प्रचार प्रारम्भ किया। ठेठ ब्रज का यह कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय अपने प्रभाव और प्रसार में कदाचित वल्लभ सम्प्रदाय के बाद ही आता है।२

राधा कृष्ण भक्त कोश में पाँच परमानंद मिलते हैं। जिनमें से परमानंद दास तृतीय ही श्री गुरु भक्ति

Scanned with ACE Scanner

Magzine : Nikasi
Shanti Devi Arya Mahila college

Principal
Shanti Devi Arya Mahila College
Dinanagar (GSP.)

Article : Samashtivad aur vyaktivad [Collectivism and Individualism]

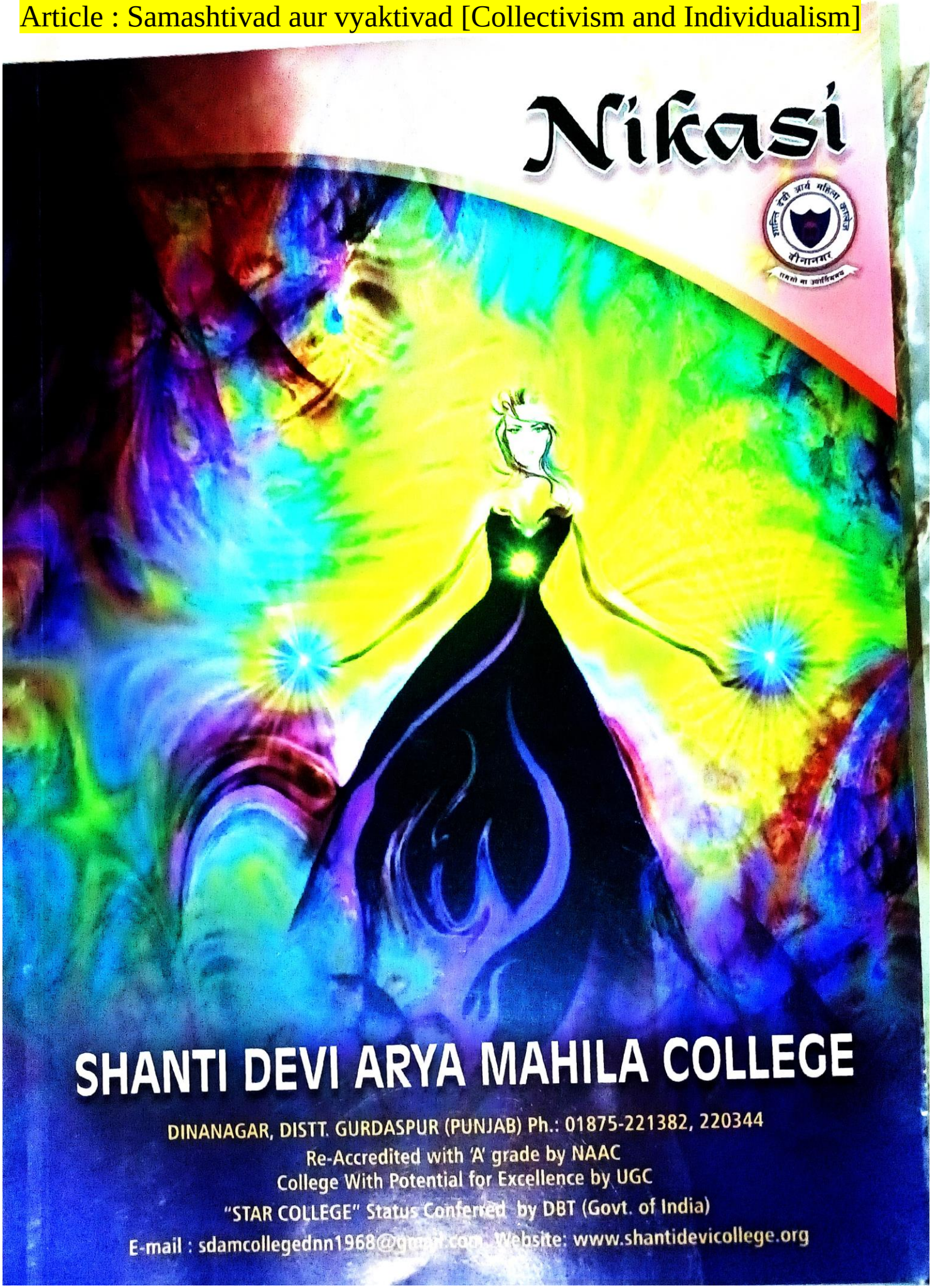

Scanned with ACE Scanner

समष्टिवाद और व्यक्तिवाद

महाभारत में कहा गया है कि 'य यतो धर्मस्ततोजय :' अर्थात जहां धर्म है वहीं विजय है। तब लोग प्रश्न करते हैं, कि महाभारत के युद्ध में कौरवों के जितने प्रमुख सेनापति थे वह चालाकी से मारे गये। भीष्म को मारने के लिए शिखण्डी को खड़ा किया गया है। द्रोणाचार्य को युद्ध में समाप्त करने के लिए युधिष्ठिर से झूठ बुलवाया गया। जयद्रथ की मृत्यु का कारण सूर्य का बादलों में छिपना और प्रकट होना बताया जाता है। दुर्योधन की मृत्यु तो कमर के नीचे गदा मारने से ही भीम के हाथों हुई। इस आधार पर पूछा जा सकता है कि पाण्डवों की जीत के लिए यह सब जो कार्य हुए क्या उन्हें धर्मानुकूल कहा जायेगा? क्या पाण्डवों ने छल किया। फिर भी जहाँ धर्म वहां जय की घोषणा ने छल किया। फिर भी जहाँ धर्म तहाँ जय की घोषणा वेदव्यास करते हैं। तो क्या यह परस्पर विरोधी बात नहीं है। क्या धर्म के नाम पर अधर्म नहीं हुआ?

इसका उत्तर खोजने पर विदित होगा कि कौरव और पाण्डव पक्ष के बीच एक बड़ा मूलगामी अन्तर था। कौरव पक्ष का प्रत्येक व्यक्ति, व्यक्तिवादी था इस लिए अनर्थ का साथ दे रहा था। भीष्म पितामह विद्वान थे किन्तु उनका व्यक्तिवादी दृष्टिकोण इसी बात से प्रकट हो जाता है कि उन्होंने सोचा – मैंने प्रतिज्ञा की हैं, शिखण्डी के आने के बाद मैं बाण नहीं चलाऊँगा। भीष्म पितामह ने यह नहीं सोचा कि वह सेनापति हैं, उन पर सेना का भार है। उन्हें केवल अपनी निजी प्रतिज्ञा की चिन्ता थी। दूसरी और अर्जुन ने जब इसी प्रकार का अपना व्यक्तिगत दुष्टिकोण बताकर शस्त्र रखने की बात कही तो भगवान कृष्ण ने उन्हें धर्म का रहस्य बताया कि तू यदि अपने तक सोचता है तो व्यर्थ सोचता है। अर्जुन ने 'मैं' को छोडा और 'हम' को स्वीकार किया। भीष्म पितामह ने न अपने अपने पक्ष का न समाज का किसी का भी विचार नहीं किया, केवल 'मैं' का विचार मात्र किया।

इस लिए यह स्पष्ट होता है कि कौरव पक्ष में पाण्डव पक्ष की तुलना में एक से एक बढ़ चढ़ कर योद्धा और सूर थे फिर भी उन सबकी कृतियां अलग – अलग थी। सबको अपनी अपनी ही चिन्ता थी। भीष्म को प्रतिज्ञा की चिन्ता थी। द्रोणाचार्य को पुत्र का मोह था। उनमें से प्रत्येक ने अपने – अपने व्यक्तिवादी दृष्टिकोण को छोड़ा। भगवान् कृष्ण के नेतृत्व में एक जुट होकर जो भी कार्य आया निभाया। जैसा कृष्ण ने कहा सब करते रहें। पाण्डव अपना – अपना अग्रह छोड़कर समष्टि के लिए ही कार्यरत हुए। उनका समष्टि का विचारकर कार्य करने का ढंग ही धर्म हुआ और व्यक्तिवादी आधार पर सोचने के कारण कौरवों का पक्ष अधर्म का पक्ष गिना गया। जीत धर्म की हुई, अधर्म की नहीं। याने समष्टिवाद ही धर्म है। व्यक्तिवाद अधर्म है। राष्ट्र के लिए काम करना धर्म है।

डॉ. डिम्पल
सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग

महान समाजसेवक लाला लाजपतराय

लाजपतराय जी ने अपने आप को साहित्य, शिक्षा तथा समाज सेवा में पूरी तरह समर्पित कर दिया। सेवा करते – करते उन्होंने अपने वकील का धन्धा एक बाधा के रूप में महसूस किया। वकालत से धन कमाने के बाद भी वकालत से उनका लगाव न था। वह इसे केवल पेट पालने से अधिक ना थे।

शिक्षा के क्षेत्र में उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान था। उनके प्रयत्न से ही 'दयानन्द कालेज' लाहौर आपना हुई थी जो बाद में पंजाब का राष्ट्रीय विद्यालय बन गया, जिसमें महान देश भक्त पढ़ने गये थे। ने 'दयानन्द ऐंगलो वैदिक समाचार' नामक एक पत्र निकाला। उन्होंने पंजाब के स्थानों पर शिक्षा ाओं को खोलने में योगदान दिया। उनके सहयोग से ही 'पंजाब नेशनल बैंक' की स्थापना हुई। लाला पतराय सात बार इस बैंक के डायरैक्टर रहे।

Scanned with ACE Scanner